بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 11.11.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़ए राशिद सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 11 नवम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु का वर्णन हो रहा था। आप रज़ी. के जीवन परिचय का कुछ भाग बयान हुआ था। इस बारे में जो रिवायतें हैं उनमें यह भी है कि आप वंश शास्त्र में निपुण थे तथा कविता में भी रूचि थी। आप रज़ी. लोगों में से अरब के वंश के विषय में सर्वाधिक जानने वाले थे विशेष रूप से क़ुरैश के गुणों तथा अवगुणों का सबसे अधिक ज्ञान रखने वाले थे किन्तु आप रज़ी. उनके अवगुणों का वर्णन नहीं किया करते थे। इसी कारण से आप रज़ी. हज़रत अक़ील बिन अबू तालिब रज़ी. की तुलना में अधिक प्रसिद्ध थे। हज़रत अक़ील रज़ी. हज़रत अबू बकर रज़ी. के बाद क़ुरैश के वंश शास्त्र तथा उनके पूर्वजों एवं उनकी अच्छाईयों और बुराईयों के बारे में सबसे अधिक जानने वाले थे किन्तु हज़रत अक़ील रज़ी. क़ुरैश को अच्छा नहीं मानते थे क्यूँकि वे उनकी बुराईयों का भी वर्णन कर देते थे।

मक्का के लोगों की दृष्टि में हज़रत अबू बकर रज़ी. उनके अति उत्तम लोगों में से थे अतः जब भी उनको कोई कठिनाई पेश आती तो वे हज़रत अबू बकर रज़ी. से सहायता मांगा करते थे। जब क़ुरैश के कवियों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निंदा में शेअर कहे तो हस्सान बिन साबित रज़ी. को उनकी पंक्तियों का उत्तर देने का दायित्व दिया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ी. को फ़रमाया कि क़ुरैश के वंश के बारे में हज़रत अबू बकर रज़ी. से पूछ लिया करो। हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ी. के शेअर (कविता की पंक्तियाँ) जब मक्का जाते तो वे कहते कि इन पंक्तियों के पीछे हज़रत अबू बकर रज़ी. का मार्ग दर्शन तथा विचार शामिल है।

हज़रत अबू बकर रज़ी. के जीवन परिचय को लिखने वालों ने यह विवाद उठाया है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने नियमानुसार शेअर (कविता की पंक्तियाँ) कहे थे अथवा नहीं। हज़रत अबू बकर रज़ी. का पच्चीस प्रशंसात्मक कविताओं पर आधारित एक हस्तलिखित प्राचीन लेख पत्र तुर्की के एक पुस्तकालय से उपलब्ध हुआ है जिसके विषय में कहा जाता है कि ये हज़रत अबू बकर रज़ी. के शेअर (कविता की पंक्तियाँ)हैं। इसमें किसी लिखने वाले में यहाँ तक लिखा है कि मुझे इन शेअरों का सम्बंध हज़रत अबू बकर रज़ी. से जोड़ने के बारे में पुष्टि इलहाम के रूप में हुई। तबक़ात इब्ने सअद तथा सीरत इब्ने हिश्शाम ने यही लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. ने कुछ शेअर (कविता की पंक्तियाँ) कहे थे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन पर आप स. की तदफ़ीन के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. के शेअर (कविता की पंक्तियाँ) ये बयान किए जाते हैं, इन शेअरों का अनुवाद यह है कि ऐ आँख तुझे सय्यदे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रोने के हक़ की क़सम! तू रोती रहे तथा तेरे आँसू कभी न थमें। ऐ आँख! क़ुरैश क़बीले के अति उत्तम पुत्र पर आँसू बहा जो कि शाम के समय क़बर में छुपा दिए गए हैं। अतएव बादशाहों के बादशाह, बन्दों के वाली तथा इबादत करने वालों के रब का आप स. पर दरूद हा। अतः हबीब स. के बिछड़ जाने के बाद अब कैसा जीवन। दस संसारों को शोभा देने वाली हस्ती की जुदाई के बाद कैसी शोभा। अतः जिस प्रकार हम जीवन में भी साथ ही थे, काश मौत भी एक साथ हम सबको घेरे में ले लेती।

हज़रत अबू बकर रज़ी. अति विवेक शील थे। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ी. ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने एक बन्दे को अधिकार दिया है दुनिया का अथवा उसका जो अल्लाह के पास है। तो उसने जो अल्लाह के पास है उसका पसन्द किया है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ी. रो पड़े। तब मैंने अपने दिल में कहा कि इस बुज़ुर्ग को क्या बात रुला रही है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ी. मत रो, निश्चित ही समस्त लोगों में अपनी संगत तथा अपने धन के द्वारा मेरे साथ नेकी करने वाला सबसे बढ़ कर हज़रत अबू बकर रज़ी. ही है। यदि मैं अपनी उम्मत में से किसी को ख़लील (मित्र) बनाने वाला होता तो मैं हज़रत अबू बकर रज़ी. को बनाता। इसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन का अन्तिम समय आया तो एक दिन आप स. तक़रीर के लिए खड़े हुए तथा सहाबियों से सम्बोधित होकर फ़रमाया कि ऐ लोगो! अल्लाह तआला का एक बन्दा है, उसको उसके ख़ुदा ने सम्बोधित किया तथा कहा कि ऐ मेरे बन्दे, मैं तुझे अधिकार देता हूँ कि चाहे तो दुनिया में रह और चाहे तो मेरे पास आ जा। इस पर उस बन्दे ने ख़ुदा की निकटता को पसन्द किया। जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया तो हज़रत अबू बकर रज़ी. रो पड़े और आप रज़ी. की हिचकियाँ बंध गईं। अंततः आप स. ने फ़रमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ी. से मुझे इतनी मुहब्बत है कि यदि ख़ुदा के अतिरिक्त किसी को मित्र बनाना वैध होता तो मैं हज़रत अबू बकर रज़ी. को बनाता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ पढ़ी तो हज़रत अबू बकर रज़ी. रो पड़े और कहा कि मुझे इस आयत से ख़ुदा के पैग़म्बर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन की गंध आती ह। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि नबी अलैहिस्सलाम शासनाधिकारी के समान होते है, जैसे भूमि की चकबन्दी करने वाला कर्मचारी जब अपना काम कर चुकता है तो वहाँ से चल देता है। इसी प्रकार नबी अलैहिस्सलाम जिस काम के लिए दुनिया में आते हैं तथा जब उसको कर लेते हैं तो वे इस दुनिया से विदा हो जाते हैं। अतः जब اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ की पुकार पहुंची तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने समझ लिया कि यह अन्तिम पुकार है। इससे स्पष्ट होता है कि हज़रत अबू बकर रज़ी. का विवेक अत्यधिक बढ़ा हुआ था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मौलवियों से पूछो कि हज़रत अबू बकर रज़ी. बुद्धिमान थे कि नहीं, क्या वे अबू बकर रज़ी. न थे जो सिद्दीक़ कहलाया, क्या यही वह व्यक्ति नहीं जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहले ख़लीफ़ः बने जिसने इस्लाम की बड़ी सेवा की, कि इस्लाम से विमुख होने की भयानक आपदा को रोक दिया। फिर तक़्वा से बताओ कि उन्होंने وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ۔ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ۔ पढ़ा तो उससे व्यापक रूप से प्रमाणित करना था अथवा ऐसा ग़लत प्रमाण कि एक बच्चा भी कह सकता है कि ईसा को मौता समझने वाला काफ़िर होता है अर्थात यह आयत पढ़ने का अभिप्रायः ही यह था कि एक अति स्पष्ट एवं ठोस प्रमाण दिया जाए, न कि त्रूटिपूर्ण प्रमाण।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ की आयत दो आयाम रखती है। एक यह कि तुम्हें पवित्र कर चुका, दूसरो यह कि किताब को पूरा कर चुका। यह निश्चित बात है कि जब काम हो चुकता है तो उसका पूरा होना ही निधन का प्रमाण होता है। जैसे दुनिया में भूमि की चकबंदी वाले होते हैं तथा जब वह काम पूरा हो जाता है तो कर्मचारी वहाँ से चला जाता है। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. वाली कथा सुनी तो फ़रमाया- सबसे बुद्धिमान अबू बकर है और फ़रमाया कि यदि दुनिया में किसी को दोस्त रखता तो अबू बकर को रखता, और फ़रमाया कि अबू बकर की खिड़की मस्जिद में खुली रहेगी, शेष सारी बन्द कर दो, इसमें सम्बंध क्या है? इसका अभिप्रायः क्या है? फ़रमाया- याद रखो कि मस्जिद ख़ुदा का घर है जो समस्त यथार्थ एवं ज्ञान का स्रोत है। इस लिए फ़रमाया कि अबू बकर की भीतरी खिड़की इस ओर है तो उसके लिए यह भी खिड़की रखी जावे। यह बात नहीं कि अन्य सहाबी इन गुणों से वंचित थ, उनमें भी थे बड़े बड़े विवेक शील, किन्तु सर्वाधिक गुण अबू बकर रज़ी. में थे बल्कि हज़रत अबू बकर रज़ी. की विशेषता वह व्यक्तिगत गुण था जिसने आरम्भ में भी अपना नमूना दिखाया और अंत में भी, मानो अबू बकर रज़ी. का अस्तित्व मजमूअतुल फ़िरासतैन (विवेक शीलता का समूह) था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी. अनुभवी तथा विवेक शील लोगों में स थे। आप रज़ी. ने अत्यंत उलझी हुई समस्याओं तथा उनकी जटिलाओं को देखा तथा कई अभियानों में शामिल हुए तथा उनके युद्ध की चालों को देखा। कई जंगल तथा पर्वत श्रंखलाओं को

पार किया, कितने ही विध्वंसकारी स्थान थे जिनमें आप साहस के साथ घुस गए, कितनी टेढ़ी राह थीं जिनको आप रज़ी. ने सीधा किया, कई युद्धों में आप तत्पर रहे, कितने ही फ़ितने थे जिनका आप रज़ी. ने विनाश किया। अनेक आयाम तय किए यहाँ तक कि आप रज़ी. अनुभवी एवं विवेक शील बन गए। आप रज़ी. कठिनाईयों पर धैर्य रखने वाले तथा संघर्ष करने वाले थे। अतः अल्लाह तआला ने आप रज़ी. को अपनी आयतों के पात्र आप स. की संगत के लिए चुना और आप रज़ी. की सच्चाई एवं दृढ़ संकल्प होने के कारण आप रज़ी. की प्रशंसा की। यह संकेत था इस बात का, कि आप रज़ी. रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारों में सबसे बढ़ कर हैं। आप रज़ी. स्वाधीनता के ख़मीर से पैदा किए गए तथा वफ़ा आप रज़ी. की घुट्टी में थी, इस कारण से आप रज़ी. को भयावह आशंका तथा दिल हिला देने वाले समय पर चुना गया, अल्लाह सर्वाधिक ज्ञानी तथा विवेक पूर्ण है। वह समस्त स्थितियों को उनके उचित समय एवं स्थान पर रखता है। उसने इब्ने अबी क़हाफ़ा पर विशेष कृपा फ़रमाई तथा उसे दिव्य एवं अद्वित्तीय व्यक्तित्व बना दिया।

हज़रत अबू बकर रज़ी. को स्वप्न-फल की विद्या भी बहुत आती थी। लिखा है कि इस विद्या में हज़रत अबू बकर रज़ी. अति निपुण थे यहाँ तक कि हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक दौर में आप रज़ी. सपनों का अर्थ बताया करते थे। इमाम मुहम्मद इब्ने सीरीन फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. सबसे बड़े स्वप्न-फल बयान करने वाले ज्ञानी थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति न होने के कारण जिन सहाबियों को मस्जिद नबवी में नमाज़ पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनमें हज़रत अबू बकर रज़ी. भी शामिल हैं। हज़रत अबू बकर रज़ी. का एक विशेष सौभाग्य यह भी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अन्तिम दिनों में विशेष रूप से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार नमाज़ें पढ़ाने का सौभाग्य मिला। हज़रत आयशा रज़ी. ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अबू बकर हों तो उचित नहीं कि कोई अन्य इमामत करवाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अंत में फ़रमाया कि यह वर्णन इन्शाअल्लाह आगे भी बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131